3

# नई शिक्षा नीति एवं महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन एक तुलनात्मक विवेचन

उषा शुक्ला*

नई शिक्षा नीति की रूपरेखा (ड्राफ़्ट) अर्थात् बालक में निहित सभी संभावनाओं के समुचित विकास हेतु एक पूर्णतः व्यावहारिक कार्यक्रम की रूपरेखा *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में दी गई हैं ये अनुशंसाएँ बालकों में ऐसी चेतना जगाने का बिगुल फूँकती है जो उनमें नवीन ज्ञान के आरोपण के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण के लिए प्रोत्साहित करती हैं। मनुष्य की सर्जनात्मक-ऊर्जा के उद्घाटन के लिए ज्ञान को सृजित करना वर्तमान युग की अनिवार्यता है। साथ ही साथ वर्तमान संस्कृतिविहीन और मूल्यविहीन युग में जीवन के शाश्वत मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी को सचेत करना भी उतना ही आवश्यक है। वर्तमान परिस्थिति में यह भी ज़रूरी है कि सामाजिक-संबंधों को आत्मीय बनाते हुए नई पीढ़ी तक हस्तांतरित किया जाए क्योंकि व्यक्ति का आत्म-संप्रत्यय जब सामूहिक आत्म-संप्रत्यय बन जाता है, तब एक विशिष्ट-संस्कृतिमूलक समाज का निर्माण होता है।

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

वस्तुतः यह निर्माण ही हम सबका वास्तविक ध्येय है, जिसकी स्थायी छाप महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन में मिलती है। वर्तमान संदर्भों में नई शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) भी भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में अपनी अनुशंसाएँ प्रस्तुत कर रही है।

नई शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) के रूप में हमारे शिक्षाशास्त्रियों ने जिस शिक्षा व्यवस्था का सूत्रपात किया है, वह भी हमारे राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है बशर्ते कि इसमें आधुनिकता और पुरातन संस्कृति का अभूतपूर्व संगम हो।

- नई शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) का निर्माण एक राष्ट्रव्यापी बहस के उपरांत हुआ है। राष्ट्र तथा समाज के स्वरूप की पुनर्रचना का संकल्प लेकर शिक्षा के क्षेत्र में केंद्र, राज्य तथा समुदाय की साझेदारी का विश्लेषण करते हुए जिन आयामों

* *वरिष्ठ व्याख्याता*, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर

© NCERT not to be republished

को विस्तार से पाया है, उन्हें महात्मा गांधी के ग्राम-स्वराज्य की संकल्पना से किसी भी प्रकार पृथक नहीं किया जा सकता। इस मसौदे में यह भी उल्लिखित है कि शिक्षा व्यक्ति की प्रभुता, प्रौद्योगिकी पर स्थापित करे न कि व्यक्ति को उसका गुलाम बना दे। वस्तुत: महात्मा गांधी का सपना भी यही था। उस युग में महात्मा गांधी समझ गए थे कि इस विकासशील देश में बालक को शाला तक खींच कर लाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन 8–10 विद्यालयी सत्रों में किसी न किसी प्रकार उसे आत्मनिर्भर बनाना भी ज़रूरी है। उन्होंने करके या क्रिया द्वारा सीखने पर बल दिया है जो आज भी उतना ही आवश्यक है क्योंकि क्रिया या स्वयं करके सीखने पर सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है जो हर क्षेत्र के लिए आवश्यक है। महात्मा गांधी ने शारीरिक श्रम का सम्मान किया। उनके अनुसार मनुष्य को अपना कार्य स्वयं करना चाहिए, किसी पर निर्भर नहीं होना चाहिए। साथ ही साथ करके सीखने से भेदभाव भी मिटता है जो आज के परिप्रेक्ष्य में भी आवश्यक है। जो काम का आदर करेगा वही उत्पादन कार्य से जुड़ सकता है।

- शिक्षा की संपूर्ण परिधि की व्यापक अवधारणा इस दृष्टि से सुनिश्चित की गई है कि यही संभवत: हमारे बालकों की आंतरिक शक्तियों के प्रस्फुटन का कारण बन सकती है। अब बालक को कक्षा-कक्ष की सीमित परिधि में न बाँधकर संपूर्ण जगत की क्रिया–प्रतिक्रियाओं के साथ जोड़ने की ज़ोरदार अपील की गई है।

नई शिक्षा नीति उद्घोषित करती है कि बालक का मानसिक विकास मात्र पर्याप्त नहीं है अपितु शारीरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास पर ध्यान देना भी उतना ही ज़रूरी है। बालक समग्र आंतरिक शक्तियों के निर्माण के लिए महात्मा गांधी ने हृदय, हाथ और मस्तिष्क की शिक्षा की संकल्पना प्रस्तुत की थी जो संभवत: अब दशाब्दियों के उपरांत नई शिक्षा नीति के कलेवर में कार्य रूप में परिणत की जा सकेगी।

- निर्भयता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि निर्भयता का अर्थ है समस्त बाह्य भय से मुक्ति...क्योंकि भय हमेशा विकास और प्रस्फुटन को बाधित करता है। उन्होंने बालक को बाल-देवता कहकर संबोधित किया था इसलिए उनके विचार से बालक को

© NCERT not to be republished

हर पल समर्थन की आवश्यकता है, वह भी पूरी सहानुभूति, प्रेम एवं अगाध विश्वास के साथ... इस प्रक्रिया में दंड का कोई प्रावधान ही नहीं है। अगर नवीन शिक्षा नीति के बारे में चर्चा की जाए तो वह भी बालक को दंड के भय से मुक्त करने की ज़ोरदार अपील करती है। नई शिक्षा नीति भी बालकों को अग्रलिखित भय से मुक्ति दिलाकर उनके समन्वित विकास की दिशा में समर्थन देने में तत्पर होगी—

1. परीक्षा का भय
2. दंड का भय
3. बंधन का भय
4. असफलता का भय

- महात्मा गांधी के अनुसार, जीवन की सारी आर्थिक, राजनीतिक तथा मानसिक दासताओं से मुक्ति तभी संभव है जब मनुष्य शिक्षित हो। इसलिए उन्होंने सर्वप्रथम निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने का सुझाव प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार, साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न आरंभ, यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा स्त्री-पुरुष दोनों को शिक्षित किया जा सकता है। सर्वप्रथम उन्होंने ही निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के प्रावधान पर बल दिया था जो वर्षों बाद शिक्षा के अधिकार के रूप में क्रियान्वित किया गया है।
- महात्मा गांधी ने नवीन शिक्षा प्रणाली का जो संकल्पित स्वरूप प्रस्तुत किया था, उसके लिए अपेक्षित है कि बालक के सांस्कृतिक पक्ष को मज़बूत किया जाए। उन्होंने कहा था कि संस्कृति शिक्षा का आधार तथा विशेष अंग है। उनकी शिक्षा विद्यार्थियों में संस्कृति एवं अध्यात्म के प्रति एक आंतरिक झुकाव का निर्माण करती है और कालांतर में यही सांस्कृतिक चेतना व्यक्ति में राष्ट्रीयता की भावना का सूत्रपात करती है। प्रोफ़ेसर यशपाल की अध्यक्षता में देश के शिक्षाशास्त्रियों ने पर्याप्त विचार-विमर्श के उपरांत नवीन शिक्षा प्रणाली (ड्राफ़्ट) का जो संकल्पित स्वरूप प्रस्तुत किया था, राष्ट्रीयता

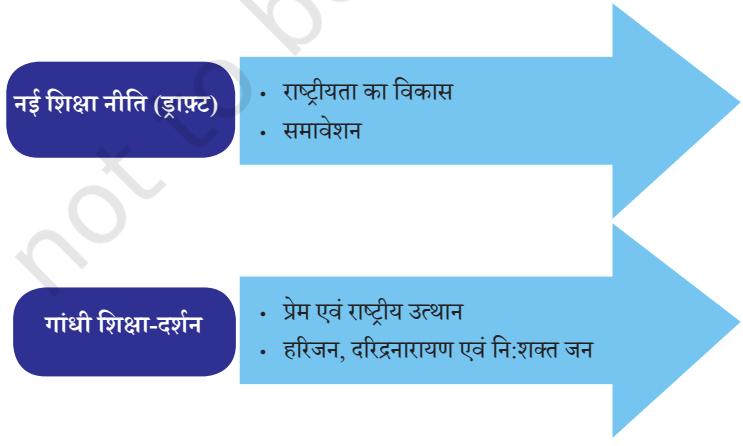


© NCERT not to be republished

की भावना के सशक्तीकरण की चिंता उसके मूल में है। इस राष्ट्रीयता की भावना को विद्यार्थियों में विकसित करना, आज के युग के लिए अनिवार्य है।

- पूर्ण विकास के उद्देश्य पर बल देते हुए उन्होंने स्पष्टतः अपने विचार *हरिजन* नामक पत्रिका में 11 सितंबर, 1937 को प्रकट किए थे— "सच्ची शिक्षा वह है जिसके द्वारा बालकों के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहन मिले।" बालक का सर्वांगीण विकास महात्मा गांधी की शिक्षा नीति का प्रमुख ध्येय है, यह शिक्षा बालक को इतना उदार बना देती है कि कक्षा-कक्ष में जाति, वर्ग, धर्म, संप्रदाय एवं जेंडर के भेद अपने आप नष्ट हो जाते हैं। जिस हृदय-मस्तिष्क एवं हस्त-कौशल की शिक्षा का सूत्रपात महात्मा गांधी ने किया है, उसका व्यावहारिक परिपालन करने के लिए ही नवीन शिक्षा प्रणाली शैक्षिक, सह-शैक्षिक तथा व्यक्तिगत-सामाजिक गुणों के मूल्यांकन पर विशेष बल देती है।
- अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी ने लिखा है— "मैंने सदैव हृदय की संस्कृति अथवा चरित्र-निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है।" यह हृदयों का जुड़ाव ही आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना का सूत्रपात करता है जो अंततः राष्ट्रीय उत्थान की दिशा में प्रयास करने के लिए नवयुवकों को प्रेरित करता है। आज यदि हम विचार करते हैं तो पाते हैं कि इसी जुड़ाव की कमी आज समाज में अनेक विसंगतियों को जन्म दे रही है। पथभ्रष्ट, दिशाहीन और अवसादग्रस्त युवा वर्ग हमारी असफलता की ओर संकेत कर रहा हैं। तकनीक प्रधान युग के मशीनी संबंध आज मानव-मानव के रिश्तों को तार-तार कर रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी इसी आपसी सद्भाव को विकसित करने के लिए सतत प्रयास का उल्लेख करती है, किंतु कैसे...? संभवत: इस सवाल पर सारे शिक्षाविद् और नीतिज्ञ मौन धारण किए हुए हैं, संभवतः इस सवाल का अचूक उत्तर हम सोच ही नहीं सके हैं।
- *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में आत्मनिर्भरता को समुचित प्रोत्साहन, प्रतिष्ठा तथा अवसर देने की आवश्यकता महसूस की गई है, ताकि भावी नागरिकों को प्रत्येक कार्य एवं व्यवहार को समुचित आदर देने के लिए तैयार किया जा सके। बीच के कुछ दशकों में यह देखा गया है कि एक किसान या कारीगर का बेटा, बारहवीं पास करके ही अपने पैतृक व्यवसाय को हीन समझने लगता है और छोटी-मोटी नौकरी की प्रत्याशा में बेरोज़गारों की अंतहीन पंक्ति के एक छोर पर जाकर खड़ा हो जाता है। लॉर्ड मैकाले की शिक्षा व्यवस्था के उपरांत जन्मी नौकरशाही की प्रवृत्ति पर आवश्यक विराम लगाया जाना ज़रूरी है। जब तक बच्चे इस धारणा को समझ नहीं सकेंगे कि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता तब तक उनकी बेकारी और उससे उत्पन्न कुंठा हमारी उन्नति के मार्ग का रोड़ा बनती ही रहेगी।

© NCERT not to be republished

अगर सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाए तो समझ पाएँगे कि गांधीवादी विचारधारा समाज के हर तबके के पर्याप्त विकास की अपील करने के साथ-साथ प्रत्येक व्यवसाय के प्रति समुचित आदर की भावना का विकास करती है।

स्वातंत्र्योत्तर-काल में जिस शिक्षा प्रणाली का वर्चस्व रहा, वह लॉर्ड मैकाले के विचारों की जकड़न से अपने-आप को सर्वथा मुक्त नहीं कर पाई थी। फलतः पाठ्यक्रम की बोझिलता बढ़ती जा रही थी। कोठारी कमीशन, मुदालियर कमीशन एवं शिक्षा के नवीन प्रस्तावों के फलस्वरूप सुधार के प्रयास तो किए गए, किंतु बच्चे के बस्ते का बोझ बढ़ता ही जा रहा था। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बाद इस क्षेत्र में सुधारों के प्रयास चिह्नित किए गए, जो नई शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) के प्रावधानों में स्थान पा सकें। यदि इस संदर्भ में भी अध्ययन करें तो पाएँगे कि महात्मा गांधी ने संभवत: इसलिए प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा, व्यावहारिक गणित, व्यवसायोन्मुख शिक्षा और ललित व शिल्प कलाओं की शिक्षा देने की पुरज़ोर अपील की थी। हम बीच के दशकों में थोड़ा-सा चूक गए। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) ने आईना दिखा दिया है और उनके अनुसार किसी न किसी उत्पादन उद्योग के माध्यम से शिक्षा देना एवं उसे उद्योग से सहसंबंधित करना बहुत आवश्यक है।

## वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यालयों की वास्तविक स्थिति?

प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ने वाले लगभग 66 प्रतिशत बच्चे कक्षा छठी तक आते-आते कोई छोटा-मोटा काम अथवा मज़दूरी करने लगते हैं। यहाँ उत्पन्न होती है उन बच्चों की लगातार अनुपस्थिति अथवा देर से शाला आने की समस्या, जो न शिक्षक हल कर पाते हैं और न ही शाला प्रबंधन समितियाँ। कई बार शिक्षकों को शाला समय पालन में महज इसलिए ढील देनी पड़ती है कि बालक कम से कम अपनी प्रारंभिक शिक्षा तो पूर्ण कर लें क्योंकि पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे बच्चे कभी-कभी शाला छोड़ने को मजबूर हो जाते हैं। इससे शाला-त्यागी बच्चों की दर में वृद्धि हो जाती है और इस समस्या का स्थायी हल किसी के पास नहीं होता। विशेष रूप से मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान के सरकारी स्कूल इन्हीं समस्याओं का सामना कर रहे हैं। यहाँ महात्मा गांधी की शिक्षा व्यवस्था प्रासंगिक हो जाती है, क्योंकि अगर बालकों को शाला परिसर में ही हुनर सीखने का अवसर और थोड़ा-सा आर्थिक लाभ हो सके तो इस समस्या का समाधान संभव होता दिखाई देता है। दिनोंदिन बढ़ती बेरोज़गारी को कम करने में भी इस तथ्य पर विचार करते हैं तो भी इस दिशा में कदम उठाना समीचीन जान पड़ता है।

नई शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) के अनुसार भी व्यावसायिक शिक्षा अबाध गति से माध्यमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालयी स्तर तक सामान्य शिक्षा के साथ-साथ समांतर रूप में चलेगी, जिसके अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी अभिरुचियों, सामर्थ्यों और लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी पहचान बनाने के साथ-साथ कमाई के योग्य बनने का अवसर प्राप्त हो सकता है। इस संपूर्ण चर्चा से इतना तो स्पष्ट है कि व्यवसायोन्मुख शिक्षा के संदर्भ में महात्मा गांधी ने अपनी जो संकल्पना प्रस्तुत की थी, वह भी एक

© NCERT not to be republished

बार नई शिक्षा नीति के माध्यम से पुनः अपने नवीन संदर्भों में क्रियान्वित हो सकती है बशर्ते कि इस दिशा में पूर्ण योजनाबद्ध रूप में सार्थक और प्रभावी कदम उठाए जाएँ।

भारतीय चिंतन के अनुसार मानव एक सकारात्मक तथा बहुमूल्य राष्ट्रीय संपदा है जिसका विकास संपूर्ण गत्यात्मकता के साथ किया जाना अपेक्षित है। जन्म से मृत्युपर्यंत चलने वाली शिक्षा व्यवस्था के सुचारु क्रियान्वयन के लिए एक समयबद्ध रूपरेखा आवश्यक है। शैक्षिक प्रक्रिया का चिरकालिक उद्देश्य जीवनपर्यंत जारी रहने वाली शिक्षा है। वस्तुतः सार्वभौम साक्षरता ही सबका लक्ष्य है। युवकों, गृहिणियों, कृषकों तथा व्यवसायियों को अपनी रुचि की शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे वे समयांतराल के साथ-साथ प्रगति की ओर उन्मुख हो, हमारा यही प्रथम ध्येय होना चाहिए। मुक्त तथा सुदूर अधिगम इस दिशा में सराहनीय प्रयास हैं। इसी आवश्यकता को आज से आठ-नौ दशक पहले ही महात्मा गांधी ने भाँप लिया था। वास्तव में उन्होंने एक सपना देखा था, प्राण-प्रण से प्रयास भी किया था, किंतु उस स्वप्न को साकार करने के लिए सबसे पहले स्वतंत्रता की वादियों में साँस लेना ज़रूरी था। उनके प्रयास उस दिशा की ओर उन्मुख हो तो गए थे, किंतु शत-प्रतिशत कार्यान्वित नहीं हो सके थे।

इस प्रकार नई शिक्षा नीति तथा महात्मा गांधी शिक्षा-दर्शन को तुलनात्मक रूप से समझने के लिए इस आलेख के तहत निम्नलिखित आयामों पर विचार करने के साथ-साथ एक व्यावहारिक और समयबद्ध योजना बनाना तथा उसे अपने सुदृढ़ रूप में क्रियान्वित करना आवश्यक होगा।

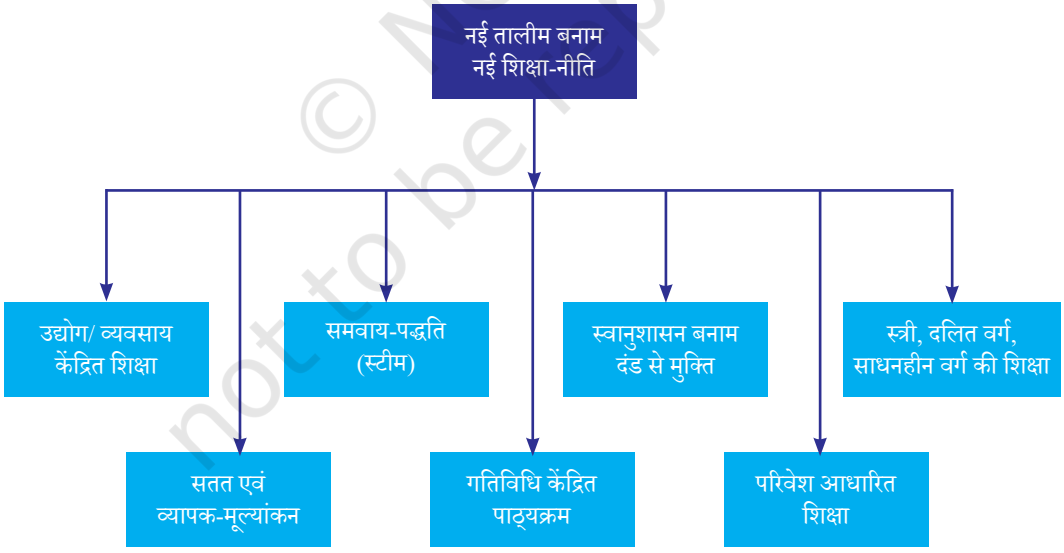


© NCERT not to be republished

नई शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) अपने नव्यतम कलेवर में आज प्रस्तुत है — नीतिशास्त्रियों, शिक्षाविदों एवं शिक्षाशास्त्रियों का कार्य एक तरीके से पूर्ण हुआ; मसौदा बन गया। अब व्यावहारिक शिक्षा-जगत में कार्य रूप में परिणति हेतु एक बार पुनः शिक्षाविदों के साथ-साथ शिक्षक-प्रशिक्षकों और कर्मठ शिक्षकों को समवेत रूप से कटिबद्ध होना होगा। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की प्रत्येक अनुशंसा को भली-भाँति आत्मसात करते हुए व्यावहारिक क्षेत्र में लागू करना एक बड़ी चुनौती है। प्रत्येक विषम परिस्थिति में महात्मा गांधी के संदेश हमारा मार्गदर्शन करते हैं। भारत के भावी नागरिकों की आत्मा को प्रस्फुटित करने के लिए राष्ट्रपिता के बनाए रास्ते पर चलने की नितांत आवश्यकता है। महात्मा गांधी के विचार सफल हो जाऐंगे यदि,

मैदान और बरामदे कक्षाएँ बन जाएं,
खेत और खलिहान बने प्रयोगशालाएँ।
हर बालक के हाथ में हुनर हो,
और निगाहों में विश्वास हो।

महात्मा गांधी ने शिक्षा के संबंध में जिन विचारों का सूत्रपात किया था वे आज के प्रगतिशील समाज की एक बहुत बड़ी पूँजी हैं। युग बदलने के साथ-साथ मान्यताएँ बदली हैं, आचार-विचार और संस्कृति में आमूलचूल परिवर्तन हो गया है किंतु भारतीय संदर्भों में महात्मा गांधी आज भी प्रासंगिक हैं। अब वह समय आ गया है कि शिक्षा के क्षेत्र में नवीन मसौदों को रूप देने के लिए पाश्चात्य प्रयोगों और अध्ययन का अंधानुकरण करने की बजाए भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के संदेशों का अपनाना अधिक उपयुक्त साबित होगा।

आज भारतीय राष्ट्र और समाज में हो रहे विघटन से मुक्ति पाने के लिए महात्मा गांधी की तालीम को अभिनव स्वरूप में ढालकर क्रियान्वित करना अनिवार्य हो गया है, जिसके माध्यम से हम उनके सपनों के भारत की नयी तस्वीर प्रस्तुत कर सकेंगे।

## संदर्भ


निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 (भारत सरकार का राजपत्र). मानव संसाधन विकास मंत्रालय. नयी दिल्ली.

भाई, योगेंद्र जीत. 2018. *शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ एवं नवाचार*. अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा.

बिहारी, रमणलाल. 2012. *शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी*. विनय रखेजा आर. लाल बुक डिपो संस्करण.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.


© NCERT not to be republished

**फार्म 4**

(नियम 8 देखिए)

प्राथमिक शिक्षक

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन स्थान | नयी दिल्ली |
| 2. | प्रकाशन अवधि | त्रैमासिक |
| 3. | मुद्रक का नाम | चन्द्रप्रभु ऑफ़सेट प्रिंटिंग वर्क्स प्रा.लि., सी–40, सैक्टर–8, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित |
| | (क्या भारत का नागरिक है?) | हाँ |
| | (यदि विदेशी है तो मूल देश का पता) | लागू नहीं होता |
| 4. | प्रकाशक का नाम | अनूप कुमार राजपूत |
| | (क्या भारत का नागरिक है?) | हाँ |
| | (यदि विदेशी है तो मूल देश का पता) | लागू नहीं होता |
| | | राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग नयी दिल्ली 110 016 |
| 5. | अकादमिक मुख्य संपादक का नाम | पद्मा यादव एवं उषा शर्मा |
| | (क्या भारत का नागरिक है?) | हाँ |
| | (यदि विदेशी है तो मूल देश का पता) | लागू नहीं होता |
| | | राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग नयी दिल्ली 110 016 |
| 6. | उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों | अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 (मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्वायत्त संस्था) |

मैं, अनूप कुमार राजपूत, *अध्यक्ष*, प्रकाशन प्रभाग एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर लिखे विवरण सत्य हैं।

अनूप कुमार राजपूत

*प्रकाशन प्रभाग*

© NCERT not to be republished